राजनीतिक विकास, सिद्धाँत संकल्पनाएँ

डॉ0 ज्ञानचन्द्र

साठ के दशक में आधुनिकीकरण तथा राजनीतिक विकास के अध्ययन संबंधी अवधारणाओं में एक परिवर्तन आया। यह माना जाने लगा कि समाजों का सीधे–सीधे परम्परागत तथा आधुनिक समाजों में वर्गीकरण ठीक नहीं है क्योंकि परम्परागत समाजों में भी आधुनिकता की कुछ प्रवृत्ति तो पाई ही जाती है। जबकि कोई भी आधुनिक समाज पूर्णतया आधुनिक नहीं कहा जा सकता है। इसीलिए राजनीतिक विकास का कोई अंतिम प्रतिमान नहीं बनाया जा सकता है। अतः राजनीतिक विकास के अध्येत्ताओं में जिनमें हंटिग्टन प्रमुख थे, ने साठ के दशक के अंतिम वर्षो में उन चरों का अध्ययन करने पर जोर दिया जिनको उनके पूर्ववर्ती लेखकों ने नजर अंदाज सा किया। हटिग्टन ने राजनीतिक विकास में उत्पन्न होने वाले उन तत्वों का भी उलेख किया जो सम्पूर्ण व्यवस्था को पतन की ओर भी ले जा सकते हैं। हंटिग्टन के अनुसार, "यह आवश्यक नहीं कि विकास सीधे–सीधे स्वतः स्फूर्ति अग्रगामी दिशा की ओर चलता है। यदि राजनीतिक व्यवस्था में स्थायित्व नहीं है और वह आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से उठ रहे तनाव का सामना करने में समर्थ नहीं है तो विकास के बदले क्षरण की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी"।

हंटिग्टन ने राजनीतिक विकास को ऐसी संस्थाओं के विकास के रूप में देखा जो सामाजिक गतिशीलता तथा राजनीतिक सहभागिता से निरन्तर उठ रहे तनावों और समस्याओं को सुलझा सके। साठ के दशक के अंतिम वर्षों में हंटिग्टन द्वारा दिए गए दृष्टिकोण की प्रधानता रही। राजनीतिक विकास में राजनीतिक स्थायित्व व व्यवस्था के महत्व को पूर्णतया जाना जाने लगा।